SUSTAINABLE DEVELOPMENT AND ENVIRONMENT PROTECTION

Chief Editor

Dr. B. M. Dhoot

Co-Editor

Dr. S.B. Donge

Dr. S.U. Kalme

Mr. K.B. Giri

Dr. S.V. Kshirsagar

Sustainable Development and Environment Protection

Chief Editor
Dr. B. M. Dhoot

Co-Editor
Dr. S.B. Donge
Dr. S.U. Kalme
Mr. K.B. Giri
Dr. S.V. Kshirsagar

ISBN No. 978-93-83995-70-8

Published by:
Anuradha Publications
Cidco-Nanded

Publication Year: 2017-18

Price- Rs. 100/-

Copyright © ACS College, Gangakhed

Printed by
Gurukrupa Offset,
Near Police Station, Gangakhed

Typesetting by:
Simran Computers
Gangakhed Dist.Parbhani

Cover Designby:
Mr. Imran K. Mohammad

CONTENTS

Sr. No.	Content
01	Environmental Perception and Behaviour
02	भारतातील कृषी क्षेत्रातील ऊर्जा वापराचा चिकित्सक अभ्यास
03	गंगाखेड तालुक्यातील हवामान बदलाचा ज्वारी उत्पादनावर झालेला परिणाम:एक भौगोलिक अभ्यास
04	कृषी विकासासाठी जलव्यवस्थापन करणे: एक भौगोलिक चिकित्सा
05	जागतिक तापमान वाढीस कारणीभूत घटक
06	पर्यावरण नीतिशास्त्राचा अभ्यास : सद्दकालीन गरज
07	Water Pollution and Water Treatment Techniques
08	Impact of Covid-19 on Agriculturure Sector
09	Hazardous effect on environment & living things due to transmission of electricity
10	Role of Technology in Agriculture and Rural Development
12	सुक्ष्मजिवाच्या विश्वात
13	नैसर्गिक साधनसंपदा संवर्धन व विकास: एक भौगोलिक चिकित्सा
14	मैं पेड़ बोल रहा हूं
15	Problems and Prospects of Agro-Based Industries in India
16	दुष्काळ एक पर्यावरणीय आपत्ती: एक चिकित्सा
17	पर्यावरण आणि विकास: एक भौगोलिक चिकित्सा
18	निसर्गाची अद्भुत निर्मिती - जांभूळ बेट
19	भारतातील प्रमुख खाद्यान्न उत्पादनाचा कालसापेक्ष अभ्यास

मैं पेड़ बोल रहा हूं

प्रो. डॉ. दयानंद उजळंबे
उप प्रधानाचार्य तथा भूगोल विभाग अध्यक्ष,
कला, वाणिज्य व विज्ञान महाविद्यालय, गंगाखेड
Mob.9970767142, 8788090502
ईमेल: dgujalambe@rediffmail.com

शहर के एक सज्जन व्यक्ति को नर्सरी कारोबार शुरू करने की तीव्र इच्छा प्रगट हो गई थी। उसके कारोबार से मेरे सहित हजारों पौधों को नर्सरी में जन्म हुआ। हम सभी को मालिक ने चारों ओर एक शेडनेट घर बनाया था। ताकि हम हवा, बारिश और धूप से आहत न हों। नर्सरी का मालिक लगातार कोशिश कर रहा था कि नर्सरी का तापमान संतुलित कैसे रहे। हम रोज सुबह, दोपहर और शाम को नल के फव्वारे से नहा करते थे । इसलिए हर पौधा बहुत खुश और फलता-फूलता नजर आ रहा था। मैं भी बहुत खुश था। हर दिन शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों से महिलाएं, पुरुष, बच्चे, वरिष्ठ नागरिक हमें देखने और खरीदारी करने के लिए नर्सरी में आते थे। हम पेड़ भाइयों के बीच लगातार कानाफूसी चलती थी। आज किसकी बारी है? यहाँ से चले जाने की? कौन जाएगा आज आपके परिवार से? जबकि इस तरह की चर्चा चलही रही थी की मुझे एक प्रकृति प्रेमी व्यक्ति ने बहुत पसंद किया और वह मुझे केवल एक सौ रुपये में खरीद लिया और घर ले आया। मेरे मालिक ने मुझे उस रात आंगन में रखा था। मुझे मालिक का परिवार बहुत पसंद आया क्योंकि वह प्रकृति प्रेमी थे। घर में फुसफुसा रहे थे, मैं सुन रहा था, कल 5 जून को विश्व पर्यावरण दिवस है। हम पेड़ लगाना चाहते हैं। पेड़ को सड़क के किनारे खाई में लगाया जाना है। मेरे परिवार के कई सदस्य मालिक के उस आँगन में मौजूद थे जहाँ मुझे उस रात रखा गया था। लेकिन वे बहुत बूढ़े थे। कुछ पानी के कमी के कारण सूख रहे थे, जबकि अन्य कोमा से गुजर रहे थे। मैं अभी-अभी खिल रहा था क्योंकि मैं नर्सरी से आया था! लेकिन मैं डर गया था। छोटा था ना, इसलिए!

मैंने कल रात सुना था कि 5 जून विश्व पर्यावरण दिवस है। मेरे मालिक के घर पर। इस दिन, दुनिया भर में पर्यावरण की सुरक्षा के लिए, पृथ्वी की सुरक्षा के लिए, संरक्षण के लिए, प्रकृति की सुरक्षा के लिए कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं। मेरे सड़क के किनारे रोपण उसी कार्यक्रम के हिस्से के रूप में किया जाना था। सुबह-सुबह, मेरे मालिक और उनके परिवार ने मुझे सड़क के

किनारे खोदी गड्ढे में लगाया। उस दिन कोई मुझे पानी डाल रहा था, कोई मेरी जड़ों पर मिट्टी डाल रहा था, और कोई मेरी सुरक्षा के लिए एक रंगीन बाड़ की जाली लगा रहा था। यहाँ मुझे कम उम्र में एक बेहतरीन अनुभव मिल गया था। जो लोग सड़क के किनारे पेड़ नहीं लगा रहे थे, वे मेरे साथ तस्वीरें ले रहे थे। कुछ तो बैनर के साथ मेरी तस्वीरें भी ले रहे थे। और सोशल मीडिया पर भेज रहे थे। इस दुनिया में, पेड़ लगाने वाले लोग अलग हैं और फल खाने वाले लोग केवल फोटो खींचने वाले अलग हैं, और ऐसे लोग ही सुर्खियों में आते हैं। जब मैं इस बारे में सोच रहा था तो, मुझे पताहीं नहीं चला कि मेरे मालिक और उसके दोस्तों ने मुझे कब छोड़ दिया, पता ही नहीं चला। मैं और मेरे जैसे अनगिनत छोटे-छोटे पौधे उस दिन परेशान थे। मैं पूरी रात उसके बारे में सोचता रहा। क्या मैं यहां जीवन जी सकता हूं, क्या मैं यहां रोजाना नहा सकता हूं? रात उसी सोच के साथ गुजर गई।

अगले दिन सूरज उग आया और मुझे लगा कि कोई हमें पानी डालने आएगा। क्योंकि कल कई लोगों ने थाटमाट में मेरा रोपण किया था। लेकिन हमारे तरफ देखने वाला कोई नहीं था। हमने पूरा दिन धूप में बिताया। सड़क पर दोपहिया, चारपहिया, बड़े वाहन, किसी तरह का धुआं उगल रहे थे । धुएं के वजह से सांस लेना बहुत मुश्किल कर दिया। हमारे आसपास लोगों की भारी भीड़ थी लेकिन किसी के पास हमें देखने का समय नहीं था। मैं उस दिन पूरी तरह से सूख चुका था। मन से थक चुका था ।मैंने उस दिन नर्सरी के परिवार और अपने मालिक को याद करना शुरू कर दिया। मैं इस बारे में सोचता रहा कि मैं जीवित रह सकता हूं या नहीं, क्योंकि मेरी और मेरे परिवार की देखभाल करने वाला यहां कोई नहीं था।

तीसरे दिन, मृग नक्षत्र के पहले ही दिन, मैं आकाश में देख रहा था, तो क्या पहले ही मृग नक्षत्र के दिन बादल छा गए थे। और पहले ही दिन बारिश शुरू हो गई । यह देखकर मेरे सहित सभी पेड़- पौधों को जान आ गई। मेरा दोस्त बारिश आज मुझसे मिलने आया । दोस्त ही था ना। इसलिए मुझे मिलने आ गया ! मुझे और मेरे परिवार को बारिश बचाएगी, यह उम्मीद पूरी हुई और ऐसाही हुआ। उस शाम मृग नक्षत्र के पहले दिन, बारिश होने लगी, मैं उस बारिश में भीग गया और मैं भी खुश था, और मेरा पेड़-पौधे परिवार भी खुश था! अब जीने की उम्मीद जाग चुकी थी...! मैं प्रकाश संश्लेषण की मदद से अपना भोजन खुद बना रहा था। भले ही वाहनों से निकलने वाले जहरीले धुएं ने मुझे परेशान किया हो, लेकिन मेरे दोस्त बारिश मुझे दो दिन के बाद, कभी-कभी, चार दिन के बाद, कभी एक हफ्ते के बाद और कभी एक महीने के बाद आता था! फिर भी हम जीने की उम्मीद छोड़ी नहीं थी। मेरा मित्र बारिश

ने मेरे बचपन में ही कहा, हे दोस्त यहां धरती पर मानव तुम्हें पानी के जगह धूप, धूल देंगे इसलिए इस धरती पर तुझे जीना है तो खुद के हौसले से जी कर दिखा। तुझे बचाने यहां कोई नहीं आएगा। यह सुनाकर देख कर मेरा मित्र बारिश चला गया इस मौसम में।

फिर क्या मैंने भोजन बनाने के लिए जड़ों को मिट्टी और पत्तियों को पानी खोजने के लिए कहा। इस जीने की दौड़ में मुझे पताही नहीं चला कि मैं खुद खुद के पांव पर खड़ा हो गया । मेरे मालिक हर साल 5 जून के विश्व पर्यावरण दिवस पर दोस्तों के साथ मुझे देखने आते थे। और कहते थे, दोस्तों वह जो अच्छा पेड़ दिख रहा है, वह मैंने लगाया है। 5 जून के विश्व पर्यावरण दिवस के उपलक्ष में मैंने यह पेड़ लगाया था। फिर क्या मैं प्रकृति के संसाधनों का उपयोग करते हुए मैं पांच दस साल का हो गया । चाहे गर्मी हो या सर्दी, मूसलाधार बारिश हो या सूखा, भीषण आंधी हवा हो । मैं किसी भी परिस्थिति में बिना डरे आसपास के प्रकृति के संसाधनों का उपयोग करके बड़ा हुआ।जीने की तमन्ना जाग चुकी थी ना इसलिए।

जब मैं बड़ा हुआ, तो लोगों ने मुझ पर ध्यान देना शुरू कर दिया। बहुत से पक्षी, पशु, मनुष्य मेरी शरण में आने लगे। गर्मियों में, युवा जोड़े मेरी छाँव के नीचे छाँव में घंटों बैठे रहते थे, और दिन भर मेरे संगति में रहते थे। लेकिन मौन से कहां बैठते थे, मेरी शाखा के पत्तों को तोड़ने के लिए मशगूल रहते थे। हालाँकि, वरिष्ठ नागरिकों ने मुझे किसी भी तरह से परेशान नहीं किया। उन्होंने कहा कि हे पेड़ देवता हम घर से बाहर आ सकते हैं और इस धूप में चल सकते हैं।इस के पीछे आपकी छाव है। यह सुनकर मैं बहुत आनंदित हो गया। लोगों की सेवा करने का दृढ़ संकल्प मजबूत हुआ। कई पशु और पक्षी, मनुष्य के साथ मेरी मैत्री हो गई। मैं उस कोयल की आवाज से मंत्रमुग्ध हो जाता था। मैं रोजाना कई तरह की चिड़िया के चहकते सुनाई देती थी। मुझे इसमें बहुत मजा आता था। परोपकार की भावना मेरे मन में उमड़ रही थी। जरूरतमंद लोगों के लिए, मैं उन्हें फल, फूल, छाया, कभी-कभी मेरी पत्तियों से बनी खाद, और कभी-कभी खाना पकाने के लिए जलाऊ लकड़ी देता रहता था। मैं हर दिन ऑक्सीजन बनाता था और कार्बन डाइऑक्साइड गैस को शोषित करता था। शहर में जब कभी लॉकडाउन, या बजार बंद होता था तो उस दिन मैं बहुत परेशान होता था। क्योंकि मेरा लगाव मनुष्य से हो गया था। जैसा ही, मेरी छाया चौड़ी हो गई। शहर में छोटे व्यापारी, मेरी छाया के नीचे, पानीपुरी, भेलपुरी, नारियल पानी, वडापाव, पावभाजी, विभिन्न प्रकार के जूस की गाड़ियाँ, आइसक्रीम की गाड़ियाँ जमा हो रही थी।

कभी ये व्यापारी मुझ पर खिले ठोकते थे, कभी बैनर लगाते थे, कभी ट्यूब कभी बल्ब लगाते थे और कभी फ्लैश लाइट लगाते थे। इन बर्ताव से मुझे बहुत परेशानी होती थी । लेकिन मैं कैसे बताऊं? ये सभी व्यापारी सिर्फ पैसा कमाना जानते थे। वे मेरी भावनाओं का क्या विचार करेंगे? हालाँकि, मैंने इस नियम को जारी रखा और निर्णय लिया कि मैं इस विचार से कभी नहीं हटूंगा कि परोपकार ही मेरा सच्चा धर्म है।

लेकिन एक दिन नगर नियोजन विभाग ने मेरे बगल की सड़क को चौड़ा करने का फैसला किया। और मेरे कई भाइयों को, जिनमें सड़क चौड़ीकरण के नाम पर अधिकारियों ने कुल्हाड़ियों से पेड़ तोड़ने का आदेश दिया । मैं और मेरा पेड़ परिवार परेशान थे, और मेरा मालिक भी जिसने मुझे वहां पर लगाया था । वह भी बहुत परेशान था, चिंतित था। उन्हें पता था कि सड़क के किनारे के सभी पेड़ काट दिए जाएंगे। इसलिए उन्होंने शहर में सभी पर्यावरणविदों, गैर सरकारी संगठनों, वरिष्ठ नागरिकों को संगठित किया और निगम पर पेड़ की कटाई के खिलाफ एक आंदोलन शुरू किया। कई रैलियां की गईं। लेकिन निगम सुनने को तैयार नहीं था। तब हमें एहसास हुआ, हमारा जीवन केवल कुछ दिनों के लिए है। इसी लिए हम प्रकृति में मनुष्यों और अन्य प्राणियों के लिए जितना संभव हो उतना देने की कोशिश करेंगे । हम प्रकृति द्वारा उपयोग की जाने वाली ऊर्जा को चुकाने के लिए दृढ़ संकल्पित हैं! आइए सब पेड़ -पौधे भाइयों जीवन को अंत तक जीने का संकल्प करें । लेकिन महीनों तक आंदोलन जोर पकड़ने के कारण मंत्रालय को बात सुननी पड़ी । पर्यावरण विभाग जाग गया और पेड़ों को काटे बिना सड़कों को चौड़ा करने के लिए एक नया आदेश पारित किया गया।मेरे मालिक, पर्यावरणविद, एनजीओ जिसने मुझे और मेरे परिवार को जीवन दिया। मैंने उसे धन्यवाद दिया । लेकिन मैंने उस महान व्यक्ति को भी धन्यवाद दिया जिसने पेड़ काटने का फैसला रद्द कर दिया। वनों की कटाई को रद्द करने के सकारात्मक निर्णय से हम सभी जीना चाहते हैं। उस दिन, बेचैनी और खुशी के आँसू बह रहे थे। मुझे पताहीं नहीं चला कि रात कब बीत गई और दिन कब निकल गया।

तब मैंने फैसला किया कि मैं अपने आसपास के पक्षियों और जानवरों को आश्रय दूंगा। बड़ा होकर किसान, गरीब, व्यापारियों को छाव, फूल, फल देने की कोशिश करूंगा! मेरे मित्र बारिश को जल्दी आने के लिए कहूंगा ।हम बड़े होकर ऑक्सीजन ज्यादा मात्रा में निर्माण करेंगे।सृष्टि के पूरे जीओंको श्वास लेने में तकलीफ नहीं होगी। इसकी पूरी तरह से जिम्मेदारी लेंगे । हम भूजल स्तर बढ़ाने की कोशिश करेंगे। हम मिट्टी को पकड़ के रखने की कोशिश भी करेंगे।

लेकिन हे मनुष्य मेरा और मेरे परिवार का खयाल रखना!, अपने संतो ने जो कहा है उसे भूलना नहीं। संत तुकाराम महाराज ने वृक्ष के बारे में "वृक्षवल्ली आम्हा सोयरे वनचरे"ऐसी वर्णन किया था, फिर भी मानव मुझे नष्ट करने की कोशिश क्यों कर रहा है । मुझे पता नहीं। आपके ही कुछ शोधकर्ताओं ने कहा कि पृथ्वी के कुल भौगोलिक क्षेत्र का 33% क्षेत्र वन अच्छादित होना चाहिए, ऐसी वन नीति बनाने के बावजूद आप हमें इस धरती से क्यों नष्ट करना चाहते हैं । यह हमें पता नहीं। आप हमें बांध पर नहीं देखना चाहते हैं, आप हमें बंजर भूमि पर नहीं देखना चाहते हैं, आप हमें नालियों और नदियों के किनारे पर रखना नहीं चाहते हैं, और हाँ, आप हमें आंगन में ही नहीं देखना चाहते हैं। क्यों ऐसा बर्ताव हमारे लिए हो रहा है हमने किसका क्या बिगाड़ा है। हम हर दिन ऑक्सीजन तैयार करते हैं। लोगों की सहायता करते हैं। फिर भी हमें नष्ट क्यों कर रहे हैं मानव।

हे मानव, आप केवल 5 जून के विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर वर्ष में केवल एक बार हम पर ध्यान देते हैं, आप फ़ोटो लेने के लिए ध्यान देते हैं। लेकिन आप पूरे वर्ष हमारे ऊपर ध्यान नहीं देते हैं, यदि आप हमारे संपर्क में आएंगे, तो आपको मानसिक तनाव से छुटकारा मिलेगा, हम आपको भोजन, वस्त्र और आश्रय देंगे। हम एक प्राकृतिक वातावरण प्रदान करने का भी प्रयास करेंगे।बस आप सिर्फ देखते ही रहेंगे। आप सिर्फ मेरी और मेरे भाइयों की संख्या में वृद्धि करें। निगम की सीमा के भीतर कुल्हाड़ी पर प्रतिबंध लगाएं और फिर आपको महाबलेश्वर, माथेरान, चिखलदरा कुल्लू, मनाली, शिमला, मैसूर, उटी जैसे पर्यटन स्थलों पर नहीं जाना होगा। हम आपके आस-पास ऐसी प्रकृति का निर्माण करेंगे। आप हमारे साथ दोस्ती करो, आपके साथ कई पशु- पक्षियों किसी अपेक्षा के बिना जीवन जीने की कोशिश करेंगे। आपके स्वार्थी, लालची रवैये ने पृथ्वी पर अन्य जानवरों के जीवन को भी खतरे में डाल दिया है। अपने विकास को थोड़ा धीमा करें। प्रभु ने आपके सहित अन्य जानवरों, पक्षियों, पौधों, पेड़ों और सूक्ष्म जीवों को पृथ्वी पर रहने के लिए भेजा है। यह धरती आपकी नहीं है। एक बार यह बात दिमाग से निकालो। धरती सभी प्राणियों से संबंधित है। इसे ध्यान में रखो। अन्यथा, आपको पताही नहीं चलेगा कि आपका अस्तित्व और आपका मानव समूह कब इस धरती से नष्ट हो जाएगा। आइए हम सब इस धरती पर आश्रय के लिए धरती को आभार व्यक्त करें!

*****